रात्रि क्लास ओमशांति 12/1/1967

अब शिवरात्रि आने वाली है। बच्चे पूछ रहे हैं शिवरात्रि पर क्या करना है? एक तो गवर्मेंट का हालीडे नहीं है। गजेटिड हालीडे होती है ना। जो चाहे सो छुट्टी करें। ऑफिस में आवें, नहीं आवें, मनाह नहीं है। इसको कहा जाता सौतेली, वो मातेली। अब यह गवर्मेंट को लिखना भी ज़रूर है। हम किसी का नुकसान नहीं करते हैं। हम तो समझा कर छुट्टी लेते हैं। शिवबाबा जो भारत को हर 5000 वर्ष बाद आकर वर्सा देते हैं स्वर्ग का। जो ही सबसे ऊँच भी है। पतित–पावन भी है। इसका ना मनाना यह तो जो बाप सबका उपकार करते हैं उनका (गवर्मेंट) अपकार कर रही है। ऐसे बहुत अच्छा लेख बनाना चाहिए। शिवरात्रि भी तो मानते हैं; परंतु मनुष्य पतित होने कारण बाप को कोई भी जानते नहीं हैं। मनुष्य ना आत्मा को, ना परमात्मा बाप को जानते हैं। इस समय भारत की हालत, इसलिए भारत की खास, दुनिया की आम यह हालत हुई है ड्रामाप्लान अनुसार। कल्प–2 ऐसे होता है। यह भी बताना चाहिए यह है संगमयुग जो अब चल रहा है, बाप राजयोग सिखा रहे हैं। जो राज़ हम प्रदर्शनी द्वारा सबको समझा रहे हैं। ऐसे बाप का तो दिन ज़रूर मनाना चाहिए। इसमें सारी दुनिया का कल्याण है। बाप तो है ही पतित–पावन, लिबरेटर। वो अभी यह सर्विस कर रहे हैं। हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तो प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद हैं। ब्रह्मा है शिवबाबा का बच्चा। हम मुखवंशावली ब्राह्मण वर्सा ले रहे हैं। ऐसे–2 लिखकर अख़बारों में देना चाहिए। है तो आसुरी सम्प्रदाय; परंतु शायद मान भी लेवें। भारत को जो बाप स्वर्ग बनाते हैं उनका ना मनाना माना उपकार करने वाले बाप पर अपकार करना है। अच्छी ही धूमधाम मचानी चाहिए; परंतु बच्चों का माया से अपोज़िशन है बहुत। बच्चे अभी इतना योग में नहीं रहते हैं। इसलिए इतना अटेंशन नहीं जाता है। याद में रहें तो सर्विस अच्छी कर सकते हैं। हर एक जो ब्राह्मण है अपने घर में दीवा जगा सकते हैं। दीपमाला पर लक्ष्मी से विनाशी धन मांगते हैं। यह तो सबका दीप जगाने वाले हैं। बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। लक्ष्मी से वर्सा नहीं मिलता है। इनसे तो भीख मांगते हैं। यह है बाप से वर्सा लेना। यह कोई भीख नहीं है। बाकी सब है भीख। लक्ष्मी से मांगना भीख है। बाप तो वर्सा देते हैं। ऐसे बाप को मनुष्य जानते ही नहीं हैं। मनुष्य अगर आत्मा और परमात्मा को ही जानते नहीं हैं तो बंदर से भी बदतर ठहरे ना। बाप आकर रावणराज्य से सब सीताओं को छुड़ाते हैं। कोई भी मनुष्य आत्मा और परमात्मा नहीं जानते हैं तो उनको क्या कहेंगे? ऐसे–2 ठोकना चाहिए। डरने की कोई बात ही नहीं है। परमपिता परमात्मा बिना आत्मा और परमात्मा का परिचय कोई दे ही नहीं सकते हैं। ना कोई शास्त्रों में है। बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। यह है प्रजापिता। वो है सब आत्माओं का बाप। बच्चों को तो वर्सा देना पड़े ना। तो ऐसी–2 आपस में राय निकालनी चाहिए। जितना हो सके रड़ियाँ मचानी चाहिए। भारतवासी यह तो इन्सल्ट करते हैं। ग्लानि करते हैं बाप की। इसलिए ऐसा हाल हुआ है। बाप कहते हैं तुम मेरी जब ऐसी ग्लानि करते हो तब मुझे आना पड़ता है। फिर भी अपकारियों पर आकर उपकार करता हूँ। ऐसे लिखना चाहिए जो मनुष्य समझें कि यह तो राइट है। ईश्वर सर्वव्यापी हो तो फिर जयंती किसकी मनावेंगे? वो तो आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। यह ना मालूम होने कारण सर्वव्यापी कह देते हैं। प्वाइंट्स तो बहुत हैं। टाइम भी बहुत है। इसलिए सब विचार कर राय निकालो कि क्या करना चाहिए, क्या–2 लिखना चाहिए। फिर देहली से राय कर लेंगे। जयंती होनी चाहिए एक तो शिवबाबा की, फिर प्रजापिता ब्रह्मा की; क्योंकि शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। दोनों हैं मुख्य ते मुख्य। दोनों की मनाते नहीं हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं। तो इनकी मनानी चाहिए ना। ब्रह्मा और सरस्वती की भी मनानी चाहिए। यह है सबसे हाइयेस्ट अथार्टी। अब बाबा तो मुरली में समझाते रहते हैं। कई बच्चे तो ऐसे भी हैं जो मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। बाहर में फिर जहाँ जाते हैं फिर मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। बहुत प्वाइंट्स मिस करते हैं। गफलत करते हैं बहुत। समझते हैं कि हम बहुत होशियार हो गये हैं। अच्छा, मीठे–2, सपूत, आज्ञाकारी बच्चों को यादप्यार, गुडनाइट, ओम।